टोपी शुक्ला

–राही मासूम रज़ा

गद्यांश

लेखक 'राही मासूम रज़ा' द्वारा रचित कहानी 'टोपी शुक्ला' का मुख्य पात्र टोपी है। उसके एक करीबी मित्र इफ्फन का भी पर्याप्त ज़िक्र पाठ में किया गया है क्योंकि इफ्फन को जाने बिना टोपी को जानना शायद संभव नहीं है। टोपी और इफ्फन की दोस्ती तब हुई जब वे चौथी कक्षा में पढ़ते थे। टोपी हिंदू परिवार से था, इफ्फन मुस्लिम परिवार से। फिर भी उनकी गहरी दोस्ती हुई। वह दिन टोपी के लिए बहुत दुखद और खास बन गया जिस दिन इफ्फन उससे दूर हो गया। इसका प्रभाव उसकी शिक्षा के साथ–साथ उसके संपूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ा।

वर्णनात्मक प्रश्न

[3 अंक]

(50-60 शब्द)

1. टोपी ने इफ़्फ़न की दादी से अपनी दादी बदलने की बात क्यों कही होगी? इससे बाल मन की किस विशेषता का पता चलता है? [CBSE 2020]

उत्तर : टोपी को अपनी दादी से लगाव नहीं था। वह ज़रा-सी बात पर टोपी को डाँटने और मारने के लिए तैयार रहती थीं। टोपी को ऐसा लगता था कि उसकी दादी बड़े भाई मुन्नी बाबू और छोटे भाई भैरव से अधिक प्यार करती हैं। एक बार जब टोपी ने अपने घर में अम्मी शब्द बोला,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

तब उसकी दादी बहुत भड़कीं और उसकी माँ से कहकर उसकी खूब पिटाई करवाई। उस दिन तो टोपी के मन में अपनी दादी के के प्रति नफरत पैदा हो गई। उसी दुखी मन से उसने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात की क्योंकि इफ़्फ़न की दादी उसे बहुत पसंद थीं। वह उन दोनों को बहुत प्यार करती थीं, कहानियाँ सुनाया करती थीं और जब इफ़्फ़न की बहनें उन्हें सतातीं तो दादी ही बीच-बचाव करके उन्हें बचाती थीं। इससे पता चलता है कि बच्चों का मन कितना साफ, पवित्र और भोला होता है। न उन्हें जाति और मजहब के अंतर का पता है और न ही अपने-पराए का। टोपी के बालमन को केवल इतना पता है कि इफ़्फ़न की दादी उसे अच्छी लगती हैं, इसलिए वह उन्हें अपनी दादी बनाना चाहता है।

2. इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला की मित्रता भारतीय समाज के लिए किस प्रकार प्रेरक है? जीवन मूल्यों की दृष्टि से लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए। **[CBSE 2018]**

उत्तर : भारत देश में विभिन्न प्रकार की जातियाँ और धर्म प्रचलित हैं । यह जातिगत भेदभाव समय-समय पर बड़े-बड़े दंगों और झगड़ों का रूप भी ले लेता है। लेखक राही मासूम रजा द्वारा रचित पाठ 'टोपी शुक्ला' हमारे भारतीय समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इस कहानी के दो मुख्य पात्र टोपी और इफ़्फ़न दो अलग-अलग संप्रदायों से संबंध रखते हैं। दोनों की परवरिश बिलकुल अलग माहौल में हुई। दोनों को अलग परंपराएं मिली। फिर भी उन दोनों के दिल इस कदर मिले हुए थे मानो दोनों एक-दूसरे की परछाई हों। इफ़्फ़न टोपी के बिना और टोपी इफ़्फ़न के बिना अधूरा था।

इन दोनों बच्चों की मासूमियत हम सबको जाति और धर्म से ऊपर उठकर एक होने की प्रेरणा देती है। कोई भी मजहब हमें आपस में लड़ना, वैर-भाव रखना नहीं सिखाता फिर भी हम उसी धर्म और मजहब के नाम पर आपस में टकराते रहते हैं। यह जीवन मूल्यों के बिलकुल खिलाफ है। टोपी शुक्ला कहानी सांप्रदायिक भेदभाव भुलाकर प्रेम, सद्भावना, भाईचारे और एकता को अपनाने की सीख देती है।

3. पढ़ाई में तेज होने पर भी कक्षा में दो बार फेल हो जाने पर टोपी के साथ घर पर या विद्यालय में जो व्यवहार हुआ उस पर मानवीय मूल्यों की दृष्टि से टिप्पणी कीजिए। **[CBSE 2017]**

उत्तर : यदि कोई निराश हो तो उसके जीवन में आशा का संचार करना, कोई हार रहा हो तो उसे जीतने के लिए प्रेरित करना, कोई दुखी हो तो उसके जीवन में खुशियाँ भरना मानवता की पहचान है। किंतु किसी के घावों पर नमक छिड़कना मानवीय मूल्यों के विरुद्ध है। कहानी टोपी शुक्ला का मुख्य पात्र टोपी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया। एक बार घर में पढ़ाई का वातावरण न होने के कारण और दूसरी बार अस्वस्थता के कारण। उसे अपने से छोटे बच्चों के साथ कक्षा में बैठना पड़ा। छात्र उसका मजाक उड़ाते थे, अध्यापक भी उसका नाम ले लेकर अन्य छात्रों को समझाते कि यदि नहीं पढ़ोगे तो उसकी तरह एक ही कक्षा में बैठना पड़ेगा। जब उत्तर देने के लिए हाथ उठाता तो उसे नजरअंदाज किया जाता या कहा जाता कि उससे अगले साल पूछ लिया जाएगा। यह बातें उसे तीर की तरह चुभती थीं। यही नहीं परिवार में भी उसके साथ कोई अपनेपन का व्यवहार नहीं करता था। जब तीसरी बार तीसरी श्रेणी में पास हुआ तो दादी ने ताना मारते हुए कहा कि भगवान बुरी नजर से बचाए। इस प्रकार उसके सहपाठियों, अध्यापकों और परिवार के लोगों का व्यवहार मानवीय मूल्यों की दृष्टि से बिलकुल भी उचित नहीं था।

4. घरवालों के मना करने पर भी टोपी का लगाव इफ़्फ़न के घर और उसकी दादी से क्यों था? दोनों के अनजान अटूट रिश्ते के बारे में मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अपने विचार लिखिए। **[CBSE 2016]**

उत्तर : टोपी हिंदू परंपराओं के बीच पला-बढ़ा एक बच्चा था। उसकी परवरिश हिंदू रीति-रिवाजों और वातावरण के बीच हुई थी। किंतु उसकी दोस्ती एक मौलवी परिवार के बच्चे इफ़्फ़न से हो गई और वह इतनी गहरी हो गई कि दोनों एक-दूसरे की परछाई नजर आने लगे। टोपी के घर वालों को इफ़्फ़न के साथ उसकी दोस्ती बिलकुल पसंद नहीं थी। घरवालों के मना करने के बावजूद वह इफ़्फ़न से दूर रहने, उसके घर न जाने के लिए तैयार नहीं था। उसे इफ़्फ़न और उसकी दादी के साथ वक्त बिताना बहुत अच्छा लगता था। उनके रिश्ते अनजान किंतु अटूट थे। नैतिक मूल्यों की दृष्टि से देखा जाए तो इस प्रकार के रिश्ते बहुत सच्चे और ऊँचे होते हैं। यह जाति धर्म, अपने-पराए की सीमाओं से भी ऊपर होते हैं। ये रिश्ते किसी स्वार्थ एवं लालच पर नहीं अपितु हृदय की गहराइयों पर टिके होते हैं।

5. अलग-अलग धर्म और जाति मानवीय रिश्तों में बाधक नहीं होते। 'टोपी शुक्ला' पाठ के आलोक में प्रतिपादित कीजिए। **[CBSE 2015]**

उत्तर : हमारा भारतीय समाज अलग-अलग जातियों में बँटा हुआ है। वास्तव में जाति व्यवस्था समाज में विभिन्न कार्यक्षेत्रों के आधार पर की गई थी। समाज और राष्ट्र में सभी काम सुचारू रूप से विभाजित किए जा सकें, यही जाति व्यवस्था का आधार था। किंतु समय के साथ-साथ जाति भेद ने दिलों में भेद पैदा कर दिए। लोग अपनी जाति को ही अपना मानने लगे तथा अन्य जातियों के प्रति विद्वेष की भावना पनपने लगी। वास्तव में जाति और संप्रदाय मानवीय रिश्तों में बाधक नहीं होते। 'टोपी शुक्ला' पाठ में

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इफ़्फ़न और टोपी की दोस्ती इस बात का प्रमाण है। जहाँ दिल मिल जाते हैं वहाँ जाति कोई दीवार खड़ी नहीं कर सकती। जिससे हमारे विचार मिलते हैं, वहाँ हम अपनी जाति और धर्म की सीमाओं से उठकर केवल प्रेम, भाईचारे और सद्भावना को अपना लेते हैं।

6. **जीवन मूल्यों के आधार पर इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला के संबंधों की समीक्षा कीजिए।** [CBSE 2016]

7. **अलग-अलग धर्म और जाति मानवीय रिश्तों में बाधक नहीं होते। 'टोपी शुक्ला' पाठ के आलोक में प्रतिपादित कीजिए।** [CBSE 2015]

उत्तर : दोस्ती मन का रिश्ता होता है। जहाँ मन मिल जाते हैं वहाँ मित्रता हो जाती है। इसका किसी धर्म या जाति से कोई लेना-देना नहीं है। यदि कोई किसी की जाति देखकर मित्रता करता है तो वह पवित्र और शुद्ध प्रेम नहीं हो सकता और न ही ऐसा रिश्ता स्थायी हो सकता है। यही बात 'टोपी शुक्ला' पाठ में दिखाई गई है। टोपी एक हिंदू परिवार से था। हिंदू परंपराएँ, रीति-रिवाज और वातावरण उसे बचपन से मिले थे। जबकि इफ़्फ़न एक मौलवी परिवार में पला-बढ़ा था। किंतु दोनों मिले और इतनी गहरी दोस्ती हो गई कि एक-दूसरे के बिना उनका जीवन ही अब संभव नहीं लगता था। टोपी का परिवार इफ़्फ़न से उसकी दोस्ती को बिलकुल पसंद न करता था। पर यह बात उसकी समझ से परे थी। जब उसके घर जाता तो उसकी दादी के पास बैठना, उनसे कहानियाँ सुनना उसको बेहद पसंद आता था। यहाँ तक कि उसकी दादी उसे अपनी दादी से कहीं अधिक अच्छी लगती थीं। उनके पास बैठकर वह सुरक्षित और खुश महसूस करता था।

8. **घरवालों के मना करने पर भी टोपी का लगाव इफ़्फ़न के घर और उसकी दादी से क्यों था? दोनों के अनजान अटूट रिश्ते के बारे में मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अपने विचार लिखिए।** [CBSE 2015]

उत्तर : लेखक 'राही मासूम रजा' का मानना है कि जाति भेद मानव द्वारा निर्मित है, किंतु मानव मन स्वाभाविक है, प्राकृतिक है, सहज है। जहाँ प्रेम मिलता है, विचार मिलते हैं मन वहीं जुड़ जाता है। किसी से रिश्ता करने से पहले यदि उसकी जाति-धर्म पूछा जाए, तो वह रिश्ता सच्चा नहीं हो सकता। जब टोपी और इफ़्फ़न की दोस्ती हुई तब उनके मन में यह नहीं आया होगा कि उनकी जाति, उनका रहन-सहन, उनकी परंपराएँ एक-दूसरे से मेल खाते हैं या नहीं। बस उन्हें एक-दूसरे का साथ अच्छा लगा। भले ही टोपी के घर वाले उनकी दोस्ती के सख्त खिलाफ थे, किंतु टोपी को यह बात समझ में नहीं आती थी। उसका इफ़्फ़न और उसकी दादी से अटूट रिश्ता बन चुका था। इफ़्फ़न के साथ मिलकर वह कोई गलत काम नहीं कर रहा, तो फिर घर वालों को इतना एतराज क्यों है? यदि हम मानवीय मूल्यों की दृष्टि से देखें तो झूठ बोलना, किसी को सताना, लड़ाई-झगड़ा करना गलत है। किंतु किसी से मित्रता करना, किसी के दुख-सुख में शामिल होना तो मानवीय मूल्यों को जीवित रखना ही है।

9. **इफ़्फ़न की दादी को अपना घर क्यों याद आया?** [CBSE 2012, 11]

उत्तर : इफ़्फ़न की दादी जमींदार परिवार से थीं। उनका बचपन घी-दूध खाते, गाते बजाते, मौज मस्ती करते हुए बीता था। वही यादें उनके मन में बसी हुई थीं। किंतु शादी के बाद वह एक मौलवी परिवार में आ गईं और न चाहते हुए भी उन्हें मौलविन बनकर रहना पड़ा। उनके ससुराल में गाने-बजाने को बुरा समझा जाता था, इसलिए उन्हें हमेशा अपना मन मारकर रहना पड़ा। जो बातें, जो इच्छाएँ मन में दबी रह जाएँ, वह कभी न कभी अवश्य उभर आती हैं। मृत्यु के समय इफ़्फ़न की दादी को बचपन की ही बातें याद आईं। पीहर में उन्होंने केवल बारह वर्ष ही गुजारे थे। इतना समय ससुराल में बिताने पर भी बचपन की यादें उनसे दूर नहीं हो पाईं। उन्हें अपने मायके की कच्ची हवेली, अपने हाथ से लगाया हुआ आम का बीजू पेड़ बहुत याद आया।

10. **टोपी ने किस घटना के बाद कलेक्टर साहब के बंगले की ओर रुख नहीं किया? क्यों?** [CBSE 2011]

उत्तर : टोपी का एकमात्र दोस्त इफ़्फ़न था। वह कलेक्टर साहब का बेटा था। जब उनका तबादला हो गया तब इफ़्फ़न को टोपी से दूर जाना पड़ा और उनकी जगह नए कलेक्टर साहब आए। उनके तीन बेटे थे। टोपी ने अकेलेपन और उदासी को दूर करने के लिए उनसे दोस्ती करनी चाही। एक बार वह उनके बंगले की ओर गया। वह क्रिकेट खेल रहे थे, टोपी भी उनके खेल में शामिल हुआ। किंतु उन तीनों बच्चों को शायद अपने पिता के ऊँचे ओहदे का घमंड था। उन्होंने अंग्रेजी में बात करनी शुरू की और टोपी की देसी भाषा का मजाक उड़ाया। टोपी ने जब अपनी भाषा में उनको पलटकर जवाब दिया, तो उन्होंने उसके उसके पीछे कुत्ता छोड़ दिया। कुत्ते के काट खाने पर टोपी को सुइयाँ लगवानी पड़ीं। तब उसके होश ठिकाने आए और उसने फिर कभी उस बंगले की तरफ रुख नहीं किया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

11. टोपी शुक्ला के दो बार फेल हो जाने पर अध्यापक तथा छात्र उसके साथ कैसा व्यवहार करते थे?

[CBSE 2012, 11]

उत्तर : टोपी मूर्ख या बुद्धि से कमजोर नहीं था। फिर भी नवीं कक्षा में वह दो बार फेल हो गया। पहली बार उसके घर में उसे पढ़ने का माहौल नहीं मिला। जैसे ही वह पढ़ने बैठता किसी को कोई काम याद आ जाता या उसका छोटा भाई उसे परेशान करने लगता। दूसरी बार उसे टाइफाइड हो गया। इस तरह लगातार दो साल उसे अपने से छोटे साथियों के साथ कक्षा में बैठना पड़ा। सबके बीच वह बूढ़ा-सा दिखाई देता था। छात्र उसे चिढ़ाते तो उसके काले रंग पर लाली छा जाती थी। अध्यापकों ने उसकी खबर लेना छोड़ दिया था। जब वह कोई जवाब देने के लिए हाथ उठाता तो वे कहते कि तुम्हें तो इसी कक्षा में रहना है, तुमसे अगले साल पूछ लेंगे। अन्य छात्रों को समझाने के लिए टोपी का उदाहरण दिया जाता कि पढ़ लो वरना उसकी तरह इसी कक्षा में रह जाओगे। इस प्रकार टोपी को बार-बार जलील होना पड़ता था।

12. हमारे बुजुर्ग हमारी विरासत होते हैं। टोपी शुक्ला पाठ में से उदाहरण देते हुए बताइए कि आप अपने घर में रह रहे बुजुर्गों का कैसे ध्यान रखेंगे? [CBSE 2013]

उत्तर : जैसे-जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती है, वैसे-वैसे उसका अनुभव भी बढ़ता है। जो समझ अनुभव से आती है, वह किसी अन्य विधि से नहीं आ सकती। यही कारण है कि हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं। उनके जीवन का तजुर्बा हमारे लिए मूल्यवान है। हमें उनके साथ अधिक से अधिक वक्त बिताना चाहिए, उनका ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि उनसे दूर होने का मतलब है कि मूल्यवान अनुभव और समझ से वंचित हो जाना। पाठ 'टोपी शुक्ला' में टोपी और इफ़्फ़न इफ़्फ़न की दादी के साथ बैठते थे, कहानियाँ सुनते थे। जब इफ़्फ़न की बहनें उन्हें सतातीं, तो दादी ही बीच बचाव करतीं और उन्हें समझाती थीं।

घर के बड़ों का यही फर्ज़ होता है कि वह परिवार के सभी सदस्यों में तालमेल बनाकर रखें। कैसी भी परिस्थिति हो, उसमें सभी को धैर्य का पाठ पढ़ाएँ। अपने अनुभव से सभी का उचित मार्गदर्शन करते रहें।

13. दो बार फेल हो जाने पर टोपी को किन भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा था?

[CBSE 2016]

उत्तर : मानव जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कदम-कदम पर अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। किंतु कभी-कभी ऐसी चुनौतियाँ सामने आ जाती हैं, जो बहुत ही पीड़ादायक होती हैं। टोपी को भी लगातार दो बार फेल हो जाने पर कुछ ऐसी ही भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जो उसके लिए असहनीय हो जाती थीं। जब पहली बार फेल हुआ और आठवीं के छात्रों के साथ कक्षा में बैठा तो एक छात्र ने ताना मारते हुए कहा कि तुम हमारे साथ क्यों बैठे हो? सातवीं के छात्रों के साथ बैठो। अगले साल तो तुम्हें उन्हीं के साथ कक्षा में बैठना है। अध्यापक भी उसे रह-रहकर ताने मारते थे। उसकी ओर कक्षा में ध्यान नहीं दिया जाता था। वह हाथ उठाता तो उससे अगले साल पूछने की बात कहकर टाल दिया जाता। इन चुनौतियों ने टोपी को पास होकर दिखाने की हिम्मत तो दी किंतु वह तीसरी बार भी केवल तीसरी श्रेणी में ही पास हो पाया, जिसके कारण दादी ने भी ताना मारने में कसर नहीं छोड़ी।

14. इफ़्फ़न 'टोपी शुक्ला' पाठ का एक महत्वपूर्ण पात्र है। कैसे? विस्तार से समझाइए। [CBSE 2011]

उत्तर : लेखक 'राही मासूम रजा' ने अपनी कहानी को 'टोपी शुक्ला' नाम दिया है। इससे स्पष्ट है कि कहानी का मुख्य पात्र टोपी है। किंतु उन्होंने इफ़्फ़न का भी पर्याप्त वर्णन कहानी में किया है। यदि इफ़्फ़न के बारे में वे न बताते, तो टोपी को समझना मुश्किल था क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे की परछाई थे। चौथी कक्षा में थे जब दोनों की दोस्ती हुई। इसके बाद से दोनों की और किसी से दोस्ती नहीं हुई और न ही उन्हें इसकी जरूरत लगती थी। एक-दूसरे के साथ वक्त बिताते थे, अपने मन की सभी बातें दूसरे को कहने में वह सुकून पाते थे। इसलिए ऐसा बिलकुल नहीं कहा जा सकता कि टोपी ही कहानी का मुख्य पात्र है। इफ़्फ़न का अस्तित्व भी उतना ही मायने रखता है। उसके बिना टोपी बिलकुल अकेला है। उसके जीवन की लगभग सभी घटनाएँ और परिस्थितियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इफ़्फ़न से ही जुड़ी हुई थीं।

15. राम दुलारी की मार से टोपी पर क्या प्रभाव पड़ा? 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर लिखिए।

[CBSE Sample Paper 2020]

16. टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब के होते हुए भी एक अटूट अनजान रिश्ते से बँधे थे। पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

[CBSE Sample Paper 2020]

उत्तर : टोपी के परिवार में उसके भाई थे, माँ-पिताजी थे और दादी थीं। अपनी दादी से उसे कभी लगाव नहीं हुआ क्योंकि वह वक्त-बेवक्त उसे डाँटती रहती थीं। दूसरी ओर अपने दोस्त इफ़्फ़न की दादी टोपी को बहुत अच्छी लगती थीं। वह उनके घर जाता, तो दादी के ही साथ बैठता। उनसे कहानियाँ सुनता। दादी के पल्लू में छिपकर ही वह सुकून पाता था। उनके बार-बार कहने पर भी उसने कभी उनके हाथ से कुछ खाया नहीं था, उनका नाम तक वह नहीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जानता था। किंतु उनके साथ वक्त बिताना उसे बहुत अच्छा लगता था। वह 72 साल की थीं और टोपी 8 बरस का था, किंतु दोनों के बीच जो गहरा संबंध था उसे कोई समझ नहीं पाता था। शायद दोनों ही अपने-अपने परिवार में अकेले थे और दोनों ने एक-दूसरे के अकेलेपन को दूर कर दिया था। उनके गुजर जाने पर टोपी को इफ़्फ़न का भरा-पूरा घर भी खाली महसूस होता था।

17. 'हरिहर काका' पाठ में हरिहर का मौन धारण कर लेना और 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी का अकेला पड़ जाना समाज की किस कड़वी सच्चाई को दर्शा रहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हर उम्र के व्यक्ति को एक साथी की आवश्यकता अवश्य होती है, जिससे वह अपने मन की सभी बातें कर सके। पाठ 'हरिहर काका' में गाँव के भोले-भाले किसान हरिहर काका केवल लेखक से ही अपने मन की सारी बातें कर लेते थे। अपने भाई और महंत, दोनों को उन्होंने अपना समझा किन्तु दोनों से ही धोखा खाया। उस समय लेखक भी उनके पास नहीं थे। ऐसे में हरिहर काका ने मौन धारण कर लिया। इसी प्रकार पाठ 'टोपी शुक्ला' में इफ़्फ़न के चले जाने के बाद टोपी बिलकुल अकेला पड़ गया। एक इफ़्फ़न ही था जिससे वह मन की सारी बातें करता था। इस अकेलेपन का असर यह हुआ कि वह दो बार फेल हो गया और उसका आत्मविश्वास बिलकुल चकनाचूर हो गया।

दोनों ही पाठ इस कड़वी सच्चाई को दर्शा रहे हैं कि आज हर व्यक्ति मशीनी जीवन जीने के लिए मजबूर है, किसी के पास किसी के लिए वक्त नहीं है। ऐसे में हर कोई, कभी न कभी तनाव की स्थिति से गुजरता है, जिसकी छाप हृदय पर हमेशा के लिए रह जाती है।

18. टोपी शुक्ला नवीं कक्षा में दो बार क्यों फेल हो गया था? किसी विद्यार्थी को अपनी कक्षा में सभी विद्यार्थियों के साथ सामंजस्य बिठाने में हम क्या योगदान दे सकते हैं? [Diksha]

उत्तर : टोपी शुक्ला पाठ का मुख्य पात्र टोपी नवीं कक्षा में लगातार दो बार फेल हो गया था। पहली बार उसे परिवार में पढ़ने का माहौल ही नहीं मिला। जब भी वह पढ़ने बैठता तो किसी को कोई काम याद आ जाता या उसका छोटा भाई उसे सताने लगता। दूसरी बार उसे टाइफाइड हो गया और वह पढ़ न सका। ऐसे में उसे अपने विद्यालय में छात्रों और अध्यापकों के ताने सुनने पड़े जिसके कारण परिस्थितियाँ उसके लिए और भी विषम बन गईं। यदि कोई व्यक्ति निराशा की स्थिति में है तो हमारा फर्ज बनता है कि हम उसे दिलासा दें, प्रोत्साहित करें ताकि वह उन परिस्थितियों का सामना डटकर कर सके और जीवन में आगे बढ़ सके। छात्रों को उसे समय-समय पर सहायता देनी चाहिए, उसके साथ अच्छा मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। अध्यापकों को इन छात्रों को जिम्मेदारियाँ सौंपनी चाहिए ताकि वे अपने आप को कमजोर न समझें और उनके साथ सामान्य छात्रों जैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

19. टोपी शुक्ला के इफ़्फ़न और उसकी दादी के प्रति स्नेह के क्या कारण थे? किसी के प्रति मित्रता स्थापित करने के लिए हमारे अंदर किन गुणों का होना आवश्यक है?

उत्तर : टोपी शुक्ला एक ऐसे परिवार में पला-बढ़ा था जहाँ हिंदू परंपराओं का पालन होता था। उसकी दोस्ती एक ऐसे लड़के से हुई जो मौलवी परिवार का था। टोपी और उसके दोस्त इफ़्फ़न के बीच गहरी मित्रता हो गई जो जाति-धर्म से कहीं ऊपर थी। इफ़्फ़न उसकी हर बात सुनता-समझता था और उसकी दादी उन दोनों को कहानियाँ सुनातीं, उनके साथ खूब बातें करतीं और यदि कोई उन्हें परेशान करता तो वह बीच-बचाव करके उन्हीं का पक्ष लेतीं। इसलिए टोपी को इफ़्फ़न और उसकी दादी से बहुत लगाव हो गया था।

किसी से गहरी मित्रता के लिए जाति-धर्म का एक होना जरूरी नहीं है, बल्कि मन में सहृदयता, सहानुभूति, प्रेम और भाईचारे की भावना का होना जरूरी है। जिसके हृदय में यह गुण निवास करते हैं, वही किसी का सच्चा दोस्त बन सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in